अगस्त 2019

9 शुक्रवार

हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A, Part I (Hon's)

विषय – हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्णकाल का शेष भाग

यदि हम साहित्य से भक्तिकाल के कवियों को निकाल दें, तो हमारा शेष साहित्य बहुत ही नगण्य रह जायेगा। अंग्रेज कहते

10 शनिवार

हैं कि "यदि हमारे सम्मुख एक ओर शेक्सपीयर रखा जाय और दूसरी ओर विश्व का साम्राज्य, तो पहले हम शेक्सपीयर ही चुनेंगे।" किन्तु हमारे यहाँ सूर, तुलसी आदि न जाने कितने शेक्सपीयर उस काल में हुए। इसपर डॉ० रामरतन भटनागर लिखते हैं:—"लगभग तीन सौ वर्षों की उस हृदय और मन की साधना के आधार पर ही हिन्दी-साहित्य उन्नतमुखी हो सकता है। सूर-तुलसी, कबीर, जायसी, मीरा, रसखान इनमें से किसी पर भी संसार का कोई साहित्य गर्व कर सकता है। ये वैष्णव कवि हिन्दी-भाषा के कंठमाल हैं।"

11 रविवार

यह मत वास्तव में पूर्णतः सत्य है। हमारे सूर और तुलसी तो भक्तिकाल के दो जगमगाते हुए रत्न हैं। संस्कृत साहित्य में कृष्ण पर पर्याप्त मात्रा में लिखा गया है। महाभारत के कृष्ण राजनीतिविशारद एवं भागवत में असुरसंहारक के रूप में सामने आते हैं, परन्तु सूर के कृष्ण तो सूर के ही कृष्ण थे। उनका स्वरूप तो निराला ही था। वे माखनचोर, मनमोहन तथा रसिक-शिरोमणि सभी कुछ थे। सूर ने बालकृष्ण का चित्रण बड़े ही सुन्दर रूप में किया है। वात्सल्य रस का इतना सुन्दर चित्रण अन्य कवि नहीं कर पाया।

12 सोमवार

अपने नेत्रों की ज्योति से रहित आन्तरिक ज्योति में रहकर उन्होंने जिस रूप (कृष्ण) के दर्शन किए, वह साधारण कवियों तथा भक्तों के कृष्ण से भिन्न थे। बाल लीलाओं का जितना सुन्दर, स्वाभाविक तथा मनोवैज्ञानिक चित्रण सूर ने किया है, उस स्तर पर अन्य कोई कवि पहुँच नहीं पाया।—

"तत्व-तत्व सूरा कवि, तुलसी कही अनूठी।
बची-खुंची कबीरा कही, और कही सब झूठी।"

संयोग और वियोग श्रृंगार

का चित्रण जैसा सूर ने किया है, वह हिन्दी-साहित्य में अद्वितीय है। भ्रमरगीत में आकर सूर ने कलम तोड़ दी है। जिस तर्क तथा हृदयमोहनी भावुकता द्वारा गोपियाँ उद्धव को परास्त करती हैं, उनके सामने उद्धव की सारी ज्ञान-सरिता बह जाती है और वह प्रकाण्ड पंडित अनपढ़ गोपियों द्वारा जुट जाता है। उन भोली भाली गोपियों के इस तर्क के आगे उद्धव सबकुछ भूल जाते हैं:—

"ऊधव मन नाहिं दस बीस।
एक हुतो सो गयो स्याम-संग, को अराधै ईस।"

गोपियों के साथ दूसरी कठिनता यह है कि:—

"मन में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहु निकसत नाहिं ऊधो, तिरछे है जो अड़े।"

यह बेचारी भोली गोपिकाएँ किस प्रकार कृष्ण को भुलाकर निर्गुण ब्रह्म की उपासना करें। तानसेन ने यदि कहा है:—

"किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर की पीर।
किधौं सूर को पद सुन्यो, तन मन धुनत सरीर।"

तो कोई अनुचित नहीं है।

सूर के आराध्य यदि कृष्ण थे, तो तुलसी के इष्टदेव राम थे। सूर के समान तुलसी ने अपने

15 गुरुवार

पूर्ववर्तियों के राम से भिन्न राम का चित्रण किया है। तुलसी ने रामभक्ति की वह पावन सलिला प्रवाहित की है, जिसके सम्मुख 'रामचरितमानस' सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त कर सका है। बाबू शिवनन्दन सहाय 'रामचरित मानस' के विषय में लिखते हैं कि "लाखों जन उसे अपना जीवन सर्वस्व समझते हैं, करोड़ों उसी का आश्रय पाकर कतिपय कुत्सित कर्मों से बचते हैं। कितने उसके पाठ से विरक्त साधु बन जाते हैं एवं कितने पंडित और कितने ज्ञानी कहलाने लगते हैं। सामाजिक व्यवहार, नीति, राजनीति आदि नीतियों का शास्त्र कहलाने का यह ग्रन्थ अधिकारी है।" उनके रामराज्य का आदर्श सारे

16 शुक्रवार

विश्व के लिए अनुकरणीय है।

तुलसी की 'विनयपत्रिका' का अपना स्थान है। हृदय की दीनता की भावों को इतने सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है कि वह पाठकों के हृदय को भी स्पर्श किए बिना नहीं रहती। संत तुलसीदास जी राम पर इतना लिख गये कि अब उनके पश्चात् अन्य कवियों के लिखने के लिए कुछ शेष ही नहीं रहा।

कबीर ने भी जो कुछ अटपटी भाषा में कहा, वह अद्वितीय है। वर्तमान समय में जाति-भेद मिटाने के लिए जो कुछ गाँधी ने किया, वही अपने समय में संत कबीर भी कर चुके थे। डॉ० रामकुमार वर्मा ने लिखा है —

कबीर ने अपनी प्रखर भाषा और तीखी भाव-व्यंजना से जिस काव्य का सृजन किया, वह साहित्यिक मर्यादा का अतिक्रमण भले ही कर गया हो किन्तु उनके द्वारा साहित्य में युगान्तर आया। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक सीमा को तोड़कर उन्हें ही भावधारा में बहा ले जाने का अपूर्व बल कबीर के काव्य में था।

अपनी पीड़ा में मतवाली तथा अपने प्रियतम कृष्ण के दर्शनों की अभिलाषिणी मीरा ने तो अपने हृदय के भावों को अपने गीतों में उड़ेल दिया है। उन्हें अपने प्रियतम से मिलने के लिए उत्कण्ठा है, तीव्रता है और उच्छ्वास है।

मुसलमान होकर भी जायसी ने अपना सफल महाकाव्य ~~पद्मावत~~ 'पद्मावत' हिन्दी में लिखा। लौकिक से अलौकिक भावनाओं का चित्रण करना

जायसी के कवि हृदय का प्रमाण है।

इस युग में आकर भारतीय संस्कृति के आचार-विचारों की पूर्ण रक्षा हुई है। इस युग के काव्य की आत्मा भक्ति है। इन कवियों की रचना स्वान्तः सुखाय होते पर जन-जन का मनोरंजन करती है। निराश्रित जनता के हृदय में ज्ञान तथा भक्ति की ज्योति जगाने का तथा भारतीयता की रक्षा करने का सारा श्रेय इस युग के कवियों का है। अतः इसी से इस काल को स्वर्णकाल मानना उचित प्रतीत होता है।